9

बाल साहित्य-स्वरूप और शुरुआती दौर का शिक्षण

*मीनाक्षी खार**

शुरुआती दौर के स्कूली शिक्षण में बाल साहित्य की अहम भूमिका है। साहित्य हमारी संस्कृति, जीवन शैली और रहस्यों का दर्पण है। यह स्कूल और बच्चों में जीवन की वास्तविकता को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी भी है। इसलिए यह ज़रूरी है कि शिक्षकों को उपयुक्त बाल साहित्य की परख हो और कक्षा की गतिविधियों में बाल साहित्य के उपयोग की समझ हो।

साहित्य का भाषा शिक्षण से गहरा संबंध है। वास्तव में भाषा सीखने की शुरुआत साहित्य से रूबरू होने से होती है। कहानियों, कविताओं, खेल गीतों इत्यादि का भाषा सीखने और भाषा पर पकड़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षकों के लिए गौर करने की बात है कि यह शुरुआत स्कूल आने से पहले हो जाती है। परंतु स्कूल में अपनायी जाने वाली शिक्षण पद्धतियाँ बच्चों की साहित्य से पनपी भाषा की क्षमताओं को उचित स्थान नहीं देतीं।

साहित्य से उपजी भाषा की संपूर्णता की समझ के आनंद और अनुभवों का बच्चों की अकादमिक सफ़लता में बहुत बड़ा योगदान होता है। अकादमिक सफ़लता से हमारा तात्पर्य भाषा एवं अन्य विषयों की पुख्ता समझ का बनना है।

साहित्य पर आधारित शिक्षण पद्धति निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण मानी जाती है—

- स्कूली शिक्षा शुरुआती दौर में बच्चों के स्कूल में ठहराव का एक अहम मुद्दा है। साहित्य की रोचकता बच्चों में स्कूल के प्रति आकर्षण जागृत करती है।
- साहित्य के आयामों से परिचित होने के कारण बच्चे कक्षा की गतिविधियों में भाग ले पाते हैं।
- भाषा कौशल, जैसे कि, पढ़ना, लिखना, सुनना, बोलना, का विकास एक साथ संभव होता है।
- कहानी, कविता को पढ़ने और उनसे जुड़ी गतिविधियाँ बच्चों में दुनिया की समझ और व्यक्तिगत नज़रिया विकसित करने में कारगार साबित होती हैं।
- बच्चों की स्मृति पर कम और उनके सोचने की प्रक्रिया पर ज़ोर ज़्यादा होता है। ऐसा होने से बच्चों की सोचने की प्रक्रिया सबल होती है।
- बच्चों का किताबों से परिचय और जुड़ाव में वृद्धि होती है।

यह कहना भी सत्य है कि कक्षा में साहित्य का इस्तेमाल बच्चों और शिक्षक को एक-दूसरे के करीब लाता है।

**सहायक प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली 110016

बाल साहित्य की कक्षा में महत्ता

यह बात गौरतलब है कि प्रत्येक भाषा के साहित्य कोश का एक हिस्सा 'बच्चों के साहित्य' के नाम से जाना जाता है। यह तथ्य इस बात की ओर इशारा करता है कि बच्चों के लिए एक विशेष प्रकार से गढ़ा साहित्य ज़रूरी है।

इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं—

- बच्चों का साहित्य बच्चों की आयु एवं रुचि के अनुरूप होता है।
- कहानियों और कविताओं में रोचकता होती है जो बच्चों का ध्यान उसमें बाँधे रखती है।
- कहानियों और कविताओं में विषयों की विविधता होती है।
- कल्पना पर आधारित साहित्यिक रचनाएँ बच्चों को सम्मोहित करती हैं।
- जानकारीपरक पुस्तकें, पत्र, चित्रों को समझने और उन पर कहानी बुनने वाली पुस्तकें, बच्चों के साहित्य का हिस्सा हैं।
- बाल साहित्य बच्चों को अपने घर संसार की परिक्रमा कराने के साथ-साथ लोगों और सांसारिक परिस्थितियों को समझने और परखने की क्षमता विकसित करता है।

कक्षा में बाल साहित्य

शिक्षाविद् यह मानते हैं कि साहित्य का उपयोग बच्चों को भाषा सीखने-सिखाने के लिए किया जाना चाहिए। स्कूलों में प्रचुर मात्रा में साहित्य उपलब्ध भी कराया जा रहा है। ऐसे में यह अत्यावश्यक है कि—

- शिक्षक उपयुक्त किताबों का चुनाव करें।
- स्वयं बाल साहित्य को पढ़ें और किताबों का चयन करने की समझ बनाएँ।
- बाल साहित्य को पाठ्यपुस्तक से जोड़कर पाठ का विस्तार करें।
- बाल साहित्य को कक्षा में की जाने वाली गतिविधियों का आधार बनाएँ।
- बच्चों की व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं पर गौर करें और उन्हें किताबों से जुड़ने के लिए उत्साहित करें।

बाल साहित्य का बदलता स्वरूप

हर एक पुस्तक जो बच्चों के लिए बनी हो, 'साहित्य आधारित शिक्षण पद्धति' का हिस्सा नहीं बन सकती। प्रिंटिंग प्रेस और कम्प्यूटर के इस युग में इनसे प्रभावित और भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग-बिरंगी तस्वीरों पर केंद्रित बाल साहित्य की भरमार नज़र आती है। शिक्षक और अभिवावक रंग-बिरंगी पुस्तकों को ही उपयुक्त मान सराहते और खरीद लेते हैं। परंतु क्या हम देखते हैं कि कहानी, कविता कहती क्या है? क्या कहानी में प्रवाह है, पात्रों के प्रति आकर्षण और कविता को गुनगुनाने की खूबी और अर्थों की गहराई मौजूद है। बड़े आकार के चित्र, बेमेल रंग, कहानी और चित्रण में तालमेल की कमी, कहानी या कविता की किताब को पढ़ने का अनुभव निरर्थक बना देती है।

बाज़ार में उपलब्ध ज़्यादातर बच्चों की पुस्तकों में कहानी की मौलिकता कम और उबड़-खाबड़ चित्रण ज़्यादा दिखाई देता है।

बच्चों के अनुभवों से जुड़ी कल्पना लोक में मंडराती दमदार कहानी की किताबें बच्चों को

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 66 5/26/2017 9:27:04 AM

लिखने, पढ़ने, सुनने-सुनाने, चित्रण करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। क्या है परियों-भूतों की कहानियों में, मोगली, सिंदबाद की यात्रा के साहसिक और दिलचस्प अनुभवों और पौराणिक कहानियों में, ये हमारी सामूहिक स्मृति का हिस्सा हैं और आज भी अपना आकर्षण बनाए हुए हैं। किस्सा, कहानी सुनाने के अनुभवों में आज भी यह बहुत प्रिय हैं।

आज के युग में 'सबसे ज़्यादा की होड़' में कहानीकार पहले से उपलब्ध बाल साहित्य को प्रस्तुत करने की चेष्टा में कहानी की सरंचना और मौलिकता को नष्ट ही कर देते हैं। ऐसा बाज़ार में उपलब्ध *पंचतंत्र* की कहानियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कुछ बिंदु जो हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं, वे हैं—

- मौलिक कहानियों की विशेषताओं पर ध्यान न देना।
- कहानियों को सारांश में बताने की चेष्टा में कहानी की मौलिकता और प्रवाह नष्ट हो जाता है।
- कहानीकार का ध्यान केवल अच्छाई, बुराई के प्रदर्शन पर केंद्रित है। परिस्थितियों में उतार-चढ़ाव, पात्रों का मानसिक द्वंद्व जो कहानियों में जान फूँकता है, कहीं अदृश्य हो गया है।
- कहानियाँ उपदेशात्मक ज़्यादा नज़र आती हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे कहानियाँ— क्या करना है और क्या नहीं करना है, केवल ये ही बताती हैं। क्यों करना है और क्यों नहीं करना, इसका वर्णन नहीं किया जाता।

पंचतंत्र की कहानियाँ बाल साहित्य की गुणवत्ता का एक उच्चतम उदाहरण हैं। *पंचतंत्र* की मौलिक कहानियाँ बच्चों के मनोविज्ञान, रुचि और उनके मार्गदर्शन के पहलुओं पर केंद्रित हैं। ये कहानियाँ नीति, दूरदर्शिता और मानवीय मूल्यों का बच्चों से परिचय कराती हैं। इन कहानियों का ताना-बाना ऊपरी उपरोक्त मूल्यों का संदेश पाठकों तक पहुँचाता है। यानि कि कहानीकार क्या अच्छा है और क्या बुरा और क्यों ऐसा है जैसे प्रश्नों को उठाता ज़रूर है, परंतु अंतिम निर्णय पाठकों पर ही छोड़ देता है।

अकबर बीरबल की कहानियों के विस्तार में बीरबल की सूझबूझ और चतुराई का विशेष स्थान है। परत दर परत खुलती यह मौलिक कहानियाँ एक नए परंतु रसविहीन और निरर्थक रूप में प्रस्तुत की गई हैं। कहानियों को एक चुटकले के रूप में ही बदल दिया गया है। इन कहानियों को नए परिवेश में ढालने के प्रयास से कहानियाँ वास्तविक नहीं लगती हैं और पाठक इनसे जुड़ नहीं पाते।

हाल ही में मैंने एक कहानी पढ़ी जिसमें अकबर को पर्यावरण से जुड़े वर्तमान मुद्दों की जानकारी न होने की बात की गई है। कहानी अधूरी और वास्तविकता से दूर प्रतीत होती है, क्योंकि ये मुद्दे अकबर के ज़माने में प्रचलित नहीं थे। प्रकाशक/कहानीकार ने पुस्तक में इस नए ढंग के प्रस्तुतीकरण की बात कहीं नहीं कही है जो कि लेखन से संबंधित आचार संहिता की अवहेलना भी प्रतीत होती है।

सुझाव

बाल साहित्य की किताबों में कहानी रोचक और चित्र सजीव होने चाहिए। चित्रों में जान रंग नहीं चित्रकार की सृजनात्मकता डालती है। इसलिए बच्चों

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 67 5/26/2017 9:27:04 AM

के लिए बनाई जाने वाली किताबों में कहानीकार और चित्रकार का तालमेल होना चाहिए। यह अनिवार्य है कि शिक्षक बाल साहित्य का विश्लेषण करें और उनकी कक्षा में उपयोगिता को भी निर्धारित कर लें। उदाहरण के लिए, कुछ पारंपरिक कहानियों, जैसे कि अंग्रेज़ी के बाल साहित्य की *लिट्ल रेड राइडिंग हुड*, को केवल पढ़ लेना या सुनाना ही काफ़ी नहीं होगा। इस तरह की कहानियों के कथानक पर चर्चा आज के परिवेश से जुड़कर करनी चाहिए। कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए कक्षा में ही बाल साहित्य उपलब्ध कराएँ। इसके लिए कक्षा के एक उपयुक्त कोने में रीडिंग कार्नर का निर्माण किया जाना चाहिए।

टिप्पणी

यह लेख प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम के उद्देश्यों और गतिविधियों से उभरी विचारधाराओं पर आधारित है। लेखिका इस प्रोग्राम से जुड़ी हैं।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 68 5/26/2017 9:27:04 AM